स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय
नांदेड

मानव्यविद्या कला संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (Ph.D.)

हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोधप्रबंध की रूपरेखा

[Ph.D. Synopsis]

शोध का विषय

"हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में संघर्ष के विविध आयाम"

शोधकर्ता

कविता चोखोबा किर्ते

M.A., B.Ed.

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. बालाजी भुरे

(M.A., Ph.D., SET)

शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय नळेगांव

शोधकेंद्र

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर.

अगस्त - 2023

हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथाकारोंके आत्मकथा में संघर्ष के विविध आयाम

विषयानुक्रमाणिका

अनुक्रम	शीर्षक
1)	भूमिका - Introduction
2)	शोध विषय की प्रेरणा एवम विषय चयन – Topic Selection Motivation
3)	शोधकार्य का उद्देश - Research Objection
4)	अनुसंधान पध्दतीयॉ – Research Methods
5)	अनुसंधान कार्य शीर्षक - Research Work Of Title
6)	अनुसंधान कार्य - Research Work
7)	शोधकार्य की उपलब्धियॉ - Research Achievements
8)	शोधकार्य की मौलिकता – Originality of Research Work
9)	परिशिष्ट - Appendix अ) आधार ग्रंथ सूची ब) संदर्भ ग्रंथसूची इ) कोश ई) पत्र-पत्रिकाएँ

“हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में संघर्ष के विविध आयाम”

1) भुमिका [Introduction]

हिंदी साहित्य के अंतर्गत ‘आत्मकथा’ एक महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है | आत्म्कथा में आत्मकथाकार अपने जीवन के बारे में लिखते हैं | इस विधा में लेखिका को दुःख, वेदना, संत्रास, पीडा, परेशानी, तकलीफ संघर्ष झेलना पडा है उसे व्यक्त किया गया है | आत्मकथा में संकोच का कोई गुंजाइश नहीं होती बल्कि लेखक खुलकर अपने विचारों को आत्मकथा में रखता है| आत्मकथा विधा में लेखक या लेखिका की कहानी होती है. स्वयं को ही नायक या नायिका की भूमिकाको निभाना पडता है| आत्मकथा बीती हुई घटनाओं पर आधारित विधा कहलायी जाती है| आत्मकथा के माध्यम से समकालीन समाज, राष्ट्र और संस्कृति साथ ही सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, गतिविधियों का परिचय हो जाता है|

हिंदी साहित्य में आत्मकथा सत्रहवी शताब्दी से लिखी जा रही है| 1641 में बनारसीदास लिखीत ‘अर्धकथानक’ नामक आत्मकथा का उल्लेख किया जाता है| महिला आत्मकथाकारों में जानकी देवी बजाज का नाम लिया जाता है| ‘मेरी जीवन यात्रा’ नामक 1956 में जानकी देवी की आत्मकथा प्रकाशित हुई|

स्नातकोत्तर कक्षा में पढते समय हिंदी साहित्य की विधा आत्मकथा का परिचय हुआ| जब मैंने ‘दोहरा अभिशाप’ कौशल्य बैसंत्री की आत्मकथा पढी तब से इस विधा को लेकर मेरी जिज्ञासा बढती गई, अपनी इसी जिज्ञासे के कारण महिलाओं की आत्मकथाओं का अध्ययन करने का निश्चय किया| वैसे तो हिंदी साहित्य में पुरूष लेखक और महिला लेखिकाओं की आत्मकथा आधुनिक युग में लिखी गयी है| मुलतः महिला आत्ककथाकारों की आत्मकथा पर अनुसंधान होना आवश्यक है| इस विषयपर शोधकार्य कहीं हुआ है| ऐसा दिखाई नहीं देता| कालानुरूप आत्मकथा को लेकर विचार विमर्श और चिंतन जरूरी है|

हिंदी साहित्य में महिलाओं की आत्मकथा को महत्वपूर्ण स्थान रहा है| आत्मकथा दो भागों में विभाजित होती है| एक उसकी वैयक्तिक जीवन और

दूसरा उसके आंतरिक मन की भावनाएँ, जब दोनों एक साथ व्यक्त होते हैं| तभी महिला लेखिकाओं की आत्मकथा का सृजन हो जाता है| महिला लेखिकाओंकी अनुभुति उनका विचार तथा संघर्ष का जिवंत चित्रण आत्मकथा मैं किया जाता है| महिला आत्मकथाकारों के सुख दुःख आशा, निराशा, स्वानुभव, विद्रोह, संघर्ष, चेतना आदि को जानने का प्रयास महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा से करने का निश्चित किया|

2) शोधविषय की प्रेरणा एवम् विषय चयन :-[TOPIC SELECTION MOTIVATION]

वर्तमान में हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में लेखन किया जा रहा है| कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, संस्मरण, जीवनी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, आत्मकथा आदि | परंतू महिला आत्मकथाकारोंने लिखी आत्मकथा अपनी यादों से जुडी होने के कारण उसमें लेखिका के जीवन के संदर्भ में अनेक बातें होती हैं| कुछ सुनी हुई होती है तो कुछ सुनायी हुई होती है| आत्मकथा में आसपास का परिवेश संस्कार, रीतिरिवाज, तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण होता है| वैसे तो शोधकार्य करने के लिए आत्मकथा विधा को कम मात्रा में लिया जाता है| आत्मकथा में काल्पनिकता नही होती, बल्कि सत्य होता है अधिकांशतः यथार्थता होती है| आत्मकथा में लेखिका का जीवन यथार्थ होता है| इसलिए मैंने अपने मार्गदर्शक डॉ. बालाजी भुरेजी के साथ चर्चा करके ''हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में जीवन संघर्ष के विविध आयाम'' इस विषयको शोधकार्य के लिए निश्चित किया|

पुरूष प्रधान संस्कृति ने महिलाओं पर किए अत्याचार, पति के द्वारा नकारात्मकता, असहयोग परिवार में दुय्यम स्थान आदि से उत्पन्न घुटन और इसीसे मुक्ति पाने के लिए महिला आत्मकथाकारों ने अपने भोगे हुए जीवन को कलम के माध्यम से अभियक्त किया है| अतः उनके जीवन को जानना और संमझना मेरे लिए जिज्ञासापूर्ण रहा है इसलिए इस विषय का चयन शोधकार्य के लिए किया गया है|

प्रस्तुत शोधकार्य में कुलमिलाकर पंद्रह आत्मकथाकारों की आत्मकथा का अध्ययन किया जाएगा जिसमें, कौशल्या बैसंत्री, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान,

रमणिका गुप्ता, सुशीला राय, अनीता राकेश, मन्नू भंडारी, कृष्णा अग्निहोत्री, सुशीला टाकभौर, अमृता प्रीतम, शिवानी,पद्मा सचदेव, चंद्रकिरण सौनरेक्सा, निर्मला जैन, कुसुम अंसल, आदि पुमुख रूप से है और इन सभी आत्मकारों की उन्नीस आत्मकथा का अध्ययन किया जाएगा|

3) शोधकार्य का उद्देश :- [Research Objective]

आत्मकथा लेखन बडे ही धैर्य साहस, कष्ट साध्य जीवन का कार्य होता है| इसमें किसी प्रकार की गोपनीयता नहीं होती बल्कि आत्मा का प्रगटन किया जाता है| आत्मकथाकार अपनी कमियों और खामियों सीमा-शक्तियों को गुणों और दोषों को पुरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करता है| हिंदी साहित्य की 'दोहरा अभिशाप' यह कौशल्या बैसंत्री की आत्मकथा पढने में आयी उनमें जो बोल्डपन है, धौर्य और चेतना निर्माण करने का साहस है तो जीवन संघर्ष करने से पीछे नही हटती अपने जीवन को किसी भी परिस्थिति में कामयाबी तक पहुंचना चाहती हैं| पितृसत्ताक पध्दती का स्वीकार करते हुए अपने अस्तित्व व स्वाभिमान की रक्षा करना चाहती है| इस बात 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा को पढने के बाद समझ में आया इसलिए अनुभुति पूर्ण किए गय आत्मकथा लेखन पर शोधकार्य करने की प्रबल इच्छा निर्माण हो गयी| प्रस्तुत शोधकार्य में आत्मकथा का विकासात्मक अध्ययन, सामाजिक,संघर्ष,आर्थिक संघर्ष, राजनीतिक संघर्ष, धार्मिक, सांस्कृतिक संघर्ष और आत्मकथाकारों का व्यक्तित्व और कृतित्व की सुधिजन के समक्ष रखना ही अध्ययन का मुख्य उद्देश है|

4) अनुसंधान पध्दतियॉ :- [Research Methods]

साहित्य के अंतर्गत ज्ञान इतना विस्तृत है कि इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता| इसलिए अध्ययन की दृष्टि से छोटे छोटे भागों में विभाजित करके ज्ञान को ग्रहण करना पडता है| शोधकार्य के इसी व्यापकता को देखकर मैंने 'हिंदी साहित्य में महिला आत्म्कथाकारों के आत्मकथा में जीवन संघर्ष के विविध आयाम' विषय के लिए अनुसंधान पध्दतियों का सहारा लेना आवश्यक बन जाता है| उदा. अध्ययन- अध्यापन पध्दति, सर्वेक्षण पध्दति, प्रयोगात्मक

पध्दति पूर्व अनुसंधान पध्दति साक्षात्कार प्रश्नावली पध्दति तथा निष्कर्ष पध्दति आदि का आधार लिया जा सकता है ।

5) अनुसंधान कार्य शीर्षक [Research work of Title]

अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने ‘‘हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में जीवन संघर्ष के विविध आयाम’’ इस शोध कार्य को सात अध्याय शीर्षक के आधार पर विभाजित किया है| पंद्रह महिला आत्मकथाकारों ने अपने जीवन का अनुभव अर्थात आत्म को स्पष्ट रूप से लेखनी बध्द किया है| उनके जीवन में जो यातनाएँ सहनी पडी बोल्डपन के कारण तानेबाने सुनने पडे, विविध संघर्ष का सामना करना पडा, संघर्षमय जीवन जीते समय अपने अस्मिता को जगाये रखा| प्रस्तुत विषय के अंतर्गत महिलाओं के जीवन संघर्ष का अनुसंधान करना यही शोधकार्य का उद्देश राहा है| इस विषय का सुलभता से अध्ययन हो इसी दृष्टी से सात अध्यायों में विभाजन किया गया है|

पहला अध्याय :- हिंदी साहित्य में आत्मकथा का विकासात्मक अध्ययन

दूसरा अध्याय :- महिला आत्मकथाकारों का व्यक्तितत्व एवम् कृमित्व

तीसरा अध्यय :- महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में सामाजिक संघर्ष

चौथा अध्याय :- महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में अर्थिक संघर्ष

पॉचवा अध्याय :- महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में राजनीतिक संघर्ष

छठा अध्याय :- महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में धार्मिक एवम् सांस्कृतिक संघर्ष

सातवॉ अध्याय:- उपसंहार अंत में उपसंहार प्रस्तुती के बाद समग्र निष्कर्षहोगा परिशिष्ट में आधार ग्रंथ संदर्भ ग्रंथ, एवम् पत्र- पत्रिकाओं की सुची दी जायेगी ।

6) अनुसंधान कार्य [Research Work]

हिंदी साहित्य में आत्मलेखन की आवश्यकता और प्रवृत्ती का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि संवेदना की सघनता में व्यक्ति आत्मोन्मुख होकर स्वयं को उदघाटित करने का साहस जुटाता है । यही साहस महिला आत्मकथाकारों ने अपनी आत्मकथाओं में किया है| जिनमें प्रमुखता से मैत्रेयी पुष्पा, कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री, प्रभा खेतान, मन्नु भंडारी रमणिका गुप्त,

कौशल्या बैसंत्री आदि| इन लेखिकाओं की आत्मकथा केवल किसी व्यक्ति का आख्यान मात्र नहीं हैं, बल्कि अपने समय की संस्कृति और इतिहास, पितृसत्ताक समाज व्यवस्था में महिलाओं की पीडा और व्यथा है| इसमें सामाजिक, संघर्ष, आर्थिक संघर्ष, राजनीतिक संघर्ष और धार्मिक, सांस्कृतिक संघर्ष केंद्र में है| यही दृष्टिकोन सामने रखकर अनुसंधान कार्य किया जा सकता है|

आत्मकथाओं में समय संदर्भ के परिवर्तनों के साथ उसका स्वर बदलता हुआ दिखाई देता है| साथ ही अपने अधिकार, स्वातंत्र्य, तथा आत्मनिर्णय के प्रति हर कोने से उठनेवाली आवाज, वर्ग जाति में बंधी सीमाओं के पार जाकर राष्ट्र के स्तर पर अपनी भूमिका को तलाशती है| आत्मकथा वैयाक्तिक होते हुए भी सामाजिक और राष्ट्रीय बन जाती है| इसका विश्लेषण अध्याय के आधार निम्नरूप में किया जा सकता है|

अध्याय पहिला

'हिंदी साहित्य में आत्मकथा का विकासात्मक अध्ययन'

आत्मकथा हिंदी साहित्य के अंतर्गत अल्पचर्चित विधा के रूप में मानी गयी है| कई आलोचकोंने आत्मकथा को जीवनी के अंतर्गत स्वीकार करके उसका विवेचन किया है| परंतु जब हम वर्तमान में आत्मकथा पर अनुसंधान करते है तो आत्मकथा का विकास होता जा रहा है| इसी दृष्टी से प्रस्तुत अध्याय में आत्मकथा के उद्भव और विकास में आत्मकथा का स्वरूप परिभाषा, तत्व, विशेषताऐं और ऐतिहासिकता की चर्चा होगी, साथ ही सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से आत्मकथा का विवेचन किया जा सकता है|

अध्याय दूसरा

महिला आत्मकथा कारोंका व्यक्तित्व एवं कृतीत्व

प्रस्तुत अध्याय के माध्यम से सभी महिला आत्मकथाकारोंके साहित्य का परिचय पाने के लिए उनके समग्र महिला आत्मकारों को जीवनवृत्त में जन्म, शिक्षा, नौकरी, विवाह, कार्य, पुरस्कार, लेखन का आरंभ तो व्यक्तित्व के अंतर्गत लेखिकाओं का अंतर्गत व्यक्तित्व और बर्हिगत व्यक्तित्व पर विचार विमर्श किया जाएगा |

कृतित्व में महिला आत्मकथाकारों ने आत्मकथा के साथ अन्य विधाओं में जो लेखन किया गया है उसकी चर्चा होगी|

अध्याय तीसरा

'महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में सामाजिक संघर्ष'

प्रस्तुत अध्याय महिला आत्मकथाकरों के आत्मकथा में महिलाओं ने किए सामाजिक संघर्ष के अंतर्गत पारिवारिक संघर्ष में, उपेक्षित स्त्री के रूप में संघर्ष, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, उन्मुक्त जीवन जीने के लिए संघर्ष पर्दाप्रथा के लिए संघर्ष, अन्याय, अत्याचार के विरोध में संघर्ष आदि अन्य मुद्दों को लिया जाएगा|

सामाजिक संघर्ष में जातीगत संघर्ष, शैक्षिक संघर्ष, रूढी परंपरा के संघर्ष आत्मसन्मान या प्रतिष्ठा के लिए किया गया संघर्ष, दहेज के लिए किया गया संघर्ष, स्वरक्षा के लिए संघर्ष, आदि अन्य संघर्षो को आत्मकथा मैं व्यक्त किया गया है|

अध्याय चौथा

'महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में आर्थिक संघर्ष'

आधुनिक काल में महिला की आर्थिक स्थिती में सुधार आया लेकिन आज भी कई महिला को आर्थिक संघर्ष करना पडता है| उसीतरह महिला आत्मकथाकारों को भी अपने परिवार में ही आर्थिक संघर्ष करना पडा है| तो कभी परिवार के लिए आर्थिक समस्या से जुझना पडता है, तो समाज के साथ आर्थिक स्थिति का सामना करना पडा है, हर मुसीबत में महिलाओं की आत्मकथा में स्त्री ही केंद्र में रहकर संघर्ष करती दिखाई देती है| प्रस्तुत अध्याय में इसीप्रकार विवेचन किया जा सकता है|

अध्याय पॉचवा

'महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में राजनीतिक संघर्ष'

पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में राजनिती के कारण महिलाओं को पुरूष के इशारों पर चलाना पडता है| फिर भी राजनीति में सक्रिय सहभाग लेने के लिए महिलाऍ संघर्ष करके अपना स्थान बनाने के लिए परंपराओं का विद्रोह करती है| प्रस्तुत अध्याय में अपने परिवार से राजनीति में प्रवेश करने के लिए संघर्ष स्वार्थ

और सत्ता के लिए संघर्ष, आदि अन्य मुद्दों को लेकर महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में चित्रित राजनीतिक संघर्ष का चित्रण किया जा सकता है|

अध्याय छठा

महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में धार्मिक एवम् सांस्कृतिक संघर्ष :-

धर्म के नामपर आज भी महिलाओं का शोषण किया जाता है| कितनी सदियों सें महिलाओ की धार्मिकता और सांस्कृतिकता को लेकर अन्याय अत्याचार किए जाते है| प्रस्तुत अध्याय में महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में धार्मिक और सांस्कृतिक संघर्ष को चित्रण होगा, जिसमें आचार-विचार, लोक'व्यवहार, जीवनमुल्य, रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज, विवाह, उत्सव, त्यौहार, क्रीडा, आदि बातों की विश्लेषित किया जायेगा| साथही प्रदर्शन प्रियता, महिला जागृति, आत्मविश्वास के साथ जीना इसका भी विवेचन होगा|

अध्याया सातवा

उपसंहार :-

प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त छ अध्याय का समग्र सार होगा| सभी अध्यायों के माध्यम जो बात कही गई है उसे कहने की चेष्टा या प्रयास इस अध्याय में हम देख सकते है| अर्थात उपसंहार के रूप में सभी अध्यायों का निचोड याने सातवॉ अध्याय कह सकते है| इसीतरह हिंदी साहित्य में 'महिला आत्मकथाकारोंके आत्मकथा में संघर्ष के विविध आयाय' इस विषय को लेकर शोधकार्य किया जा सकता है|

7) शोधकार्य की उपलब्धीयॉ: [Research achievements]

1) महिला आत्मकथाकरों ने अपनी आत्मकथा में संपूर्ण जीवन का विवरण देकर और कुछ घटनाओं से व्यक्तित्व विकास को क्रमबध्द रूप से प्रस्तूत करना|
2) आत्मकथा के माध्यम से जीवन संघर्ष, वैयक्तिकता और आत्मविश्लेषण को यथार्थ के धरातलपर प्रस्तूत करना|
3) आत्मकथा में महिला लेखिका स्वयं भोक्ता होने के कारण अपने जीवन घटनाओ को सत्य एवम् ईमानदारी से व्यक्त करने के लिए सामाजिक संघर्ष

से जूझती पीडा को देखा जाएगा|

4) महिला आत्मकथाकरों के आत्मकथा में राजनीतिक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष, और धार्मिक एवम् सांस्कृतिक संघर्ष स्पष्ट होगा|

5) आत्मकथा विधा दर्पण के समान होने से, उसकी स्पष्टता, सत्यता, निश्चलता, सहजता, सरलता और निर्भीकता स्प्ष्ट होगी|

8) शोधकार्य कार्य की मौलिकता:- [Originality of Research Work]

अध्ययन को सरल व सुगठित बनाने के लिए विषय को निश्चित रेखाओं व सीमाओं में बांध लेना श्रेयस्कर होता है, क्योंकि विषय को परिसीमित कर लेने से दृष्टि में भटकाव नही आता और लक्ष्य की ओर उन्मुखता बनी रहती है| प्रस्तुत शोधकार्यमें इसी पहुलओंपर विचार किया गया है| यही विषय व्यापक है, और यथार्थ है| इसलिए इस पर केंद्रित होकर कार्य करना अपेक्षित है ताकि हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथाकारों के आत्मकथा में संघर्ष के विविध आयाम’ को स्पष्ट रूप से समझा जा सके| अतः यह विषय शोधकार्य की दृष्टि से नवीन एवं मौलिक है|

9) परिशिष्ट [Appendix]

शोधकार्य में परिशिष्ट का उपयोग शोधकार्य के अंत में किया जाता है| परिशिष्ट में सामान्य तौर से तालिका विवरण, आंकडा संसाधन, चार्ट, संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, पत्र पत्रिकाएॅं, शब्दकोश, साहित्यकोश को जोडा जाता है| पुस्तक, प्रकाशन और संस्करण के बारे में बताया जाता है| इसतरह परिशिष्ट शोधकार्य की सामग्री है, जिसे अनुसंधान कार्य में अध्ययन किया जाता है|

अ) आधार ग्रंथ सूची

आत्मकथाएॅं:-		
1)	कौसल्या बैसंत्री	दोहरा अभिशाप
2)	मैत्रेयी पुष्पा	1) कस्तुरी कुंडलि बसै 2) गुडिया भीतर गुडिया
3)	प्रभा खेतान	अन्या से अनन्या
4)	रमणिका गुप्ता	1) हादसे

		2) अपहुदरी
5)	सुशीला राय	एक अनपढ कहानी
6)	अनीता राकेश	चंद संतरे और
7)	मन्नू भंडारी	एक कहानी यह भी
8)	कृष्णा अग्निहोत्री	1) लगता नही है दिल मेरा 2) और ------- और ------- औरत
9)	सुशीला टाकभौरे	1) शिकंजे का दर्द 2) मेरी कला मेरी कहानी
10)	अमृता प्रीतम	रसीद टिकट
11)	शिवानी	सुनौः तात यंह गत मोरी
12)	पद्मा सचदेव	बुंद बावरी
13)	चंद्रकिरण सौनरेकसा	पिंजरे की मैना
14)	निर्मला जैन	जमाने से
15)	कुसुम अंसल	जो कहा नहीं गया

आ) संदर्भ ग्रंथ सूची			
अ.क्र.	**ग्रंथ नाम**	**लेखक**	**प्रकाशन**
1	दलित स्त्रीवाद की आत्मकथात्मक अभिव्यक्ति	राम नरेश राम	नयी किताब, दिल्ली
2	महिला आत्मकथा लेखन में नारी	डॉ रघुनाथ गणपति देसाई	ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी
3	आत्मकथा की संस्कृति	पंकज चतुर्वेदी	प्रकाशक - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
4	साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना	बिस्सा कृष्णकुमार चंद्र	दिनमान प्रकाशन, दिल्ली.
5	हिंदी आत्मकथा स्वरूप एवं साहित्य	कमलेश सिंह	नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली
6	हिंदी आत्मकथा साहित्य का शैलीगत अध्ययन	डॉ. कमलापति उपाध्याय	साहित्य रत्नालय, कानपुर
7	हिंदी आत्मकथाएँ	सिध्दांत एवं स्वरूप विश्लेषण	विनीता अग्रवाल, सचिन प्रकाशन, नई

			दिल्ली

इ) कोशः-

1) हिंदी साहित्य कोश - धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल बनारस

2) मानक हिंदी कोश - रामचंद्र वर्मा- हिंदी साहित्य संम्मेलन प्रयाग

ई) पत्र - पत्रिकाएँ :-

1) युध्दरत आम आदमी

2) आजकल

3) साहित्यअमृत

4) आलोचना

शोधकर्ता **शोधनिर्देशक**

कविता किर्ते **डॉ. बालाजी भुरे**